REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2018

सामाजिक विकास के अग्रदूत ज्योतिबा फुले

डॉ. आरती कुमारी[1] , वर्षा किरण[2]
[1]एसोशिएट प्रोफेसर , दर्शनशास्त्र विभाग , ति. मां. भागलपुर वि. वि. , भागलपुर.
[2]शोध–छात्रा , दर्शनशास्त्र विभाग , ति. मां. भागलपुर वि. वि. , भागलपुर.

प्रस्तावना :

ज्योतिबा फुले ने अपने विचारों एवं रचनाओं के माध्यम से समाज के निम्न वर्गों में जागृति लाने का प्रयास किया है। जातिभेद, वर्गभेद एवं सम्प्रदायवाद के वे घोर विरोधी थे। उनकी स्पष्ट मान्यता थी कि समाज के दबे–कुचले वर्ग को मुख्य धारा से जोड़ कर ही समाज का समावेशी विकास संभव हो पायेगा। समता मूलक समाज की अवधारणा में उनकी गहरी आस्था थी। उनकी स्पष्ट मान्यता थी कि किसी एक वर्ग के हित की उपेक्षा कर सामाजिक विकास की नींव को मजबूती नहीं प्रदान की जा सकती है। अशिक्षा दलितों के विकास में मुख्य बाधक रही है। समाज में स्त्रियों के प्रति उपेक्षापूर्ण दृष्टि से वे काफी आहत थे। उनका अभिमत था कि स्त्रियों के उत्थान के बिना परिवार या समाज के समग्र विकास की अवधारणा को मूर्त्त स्वरूप नहीं प्रदान किया जा सकता है।

आलेख का मुख्य विवेच्य बिन्दु (Keywords) :

सामाजिक संरचना, नारी शिक्षा, दलित उद्धार, समतामूलक समाज, मानव धर्म, सामाजिक क्रांति, कुरीतियां, चतुर्दिक विकास, धार्मिक असहिष्णुता, वर्गभेद।

आधुनिक भारत की सामाजिक क्रांति में ज्योतिबा फुले का योगदान अविस्मरणीय है। वे भारतीय समाज के एक ऐसे पुरोधा थे जो सच्चे अर्थों में मानवतावादी थे। उन्होंने क्रांति का अलख न सिर्फ भारतीय आजादी के लिये जलाया बल्कि समाज में व्याप्त कुरीतियों को भी दूर करने का प्रयास किया। तत्कालीन समाज दो वर्गों में विभक्त था। सवर्ण वर्ग जो संभ्रांत था, उसके पास सारी सुविधाएँ उपलब्ध थीं। वही निम्न वर्ग को अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्त्ति के लिए भी संभ्रांत वर्ग पर निर्भर रहना पड़ता था। आज भी जाति प्रथा, नक्सलवाद, आतंकवाद, धर्म एवं संप्रदाय के नाम पर समाज में विभाजन की दीवार खींची हुई है। एक ओर बैंक द्वारा दी जाने वाली कर्ज की सुविधा का विजय माल्या जैसे सशक्त उद्योगपति आसानी से उपभोग कर रहे हैं वहीं दूसरी तरफ किसानों को दी जा रही ऋण को न चुकाने की स्थिति में वे आत्महत्या कर रहे हैं जो सामाजिक समरसता की पोल खोल रहा है। उसी प्रकार स्त्रियों के विषय में बड़ी–बड़ी बातें की जाती है। परंतु निर्भया कांड जैसी घटनाएँ और दिल्ली तथा देश के विभिन्न क्षत्रों में होने वाली बलात्कार की घटनाओं में होने वाली बढ़ोतरी समाज में स्त्रियों की दशा को परिलक्षित करती है। एक तरफ कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, अरूंधति राय, मेघा पाटकर, गीता फोगाट आदि महिलाएँ पुरूषों से कंधे–से–कंधा मिला कर चल रही है; लेकिन दूसरी तरफ, स्कूल, विश्वविद्यालय, ऑफिस, कार्पोरेट जगत् कहीं भी महिलाएँ सुरक्षित नहीं है। वहीं महादेवी वर्मा कहती हैं –

''स्त्री न घर का अलंकार मात्र बनकर जीवित रहना चाहती है, न देवता की मूर्ति बनकर प्राण प्रतिष्ठा चाहती है। कारण वह जान गई है कि एक का अर्थ अन्य की भोभा बढ़ाना है तथा उपयोग न रहने पर फेंक दिया जाता है तथा दूसरे का अभिप्राय दूर से उस

पुजापे का देखते रहना है, जिसे उसे न देकर उसी के नाम पर लोग बाँट लेंगे।''[1]

महादेवी वर्मा पुनः अभिमत प्रकट करती है –

''भारतीय पुरुष जैसे अपने मनोरंजन के लिए रंग–बिरंगे पक्षी पाल लेता है, उपयोग के लिए गाय या घोड़ा पाल लेता है इसी प्रकार वह एक स्त्री को भी पालता है। अपने पालित पशु पक्षियों के समान ही उसके भारीर और मन पर अपना अधिकार समझता है।''[2]

उन्हें अपनी सुरक्षा के लिए दूसरे पर निर्भर होना पड़ता है। यह कैसी विडंबना है जहां अपनी आत्म–निर्भरता के लिए उन्हें दूसरे पर निर्भर करना पड़े।

उपर्युक्त समस्याएँ आज भी समाज में सुरसा के समान मुँह फैलाए खड़ी है। ऐसी परिस्थिति में तत्कालीन समाज सुधारक ज्योतिबा फुले की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। वे सच्चे अर्थों में मानवतावादी विचारक थे जिन्होंने समाज के प्रत्येक क्षेत्र – धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि में मनुष्य की गुलामी का पुरजोर विरोध किया। उन्होंने मनुष्य को स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर बनाने के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण आधार माना। उन्होंने सभी धर्मों, पंथों, सम्प्रदायों को संकीर्ण दायरे से निकाल कर विशाल मानव धर्म के महासागर में ले जाने का प्रयास किया। उन्होंने शूद्रों, दलितों, अस्पृष्यों एवं परिव्राजकों के कष्टमय जीवन एवं उनकी समस्याओं की ओर सभी का ध्यान आकृष्ट किया। इस क्रम में उन्हें समाज के कथित ठेकेदारों का कोपभाजन भी बनना पड़ा। स्वयं उनके पिता गोविंद राव से भी इस संदर्भ में उनकी तीखी नोंकझोंक हो गयी। उनकी पुस्तक 'सत्सार' में ब्राह्मणवादी सामाजिक संरचना पर शुद्रपात्र इन शब्दों में करारा प्रहार करता है –

''जिन लोगों की अपेक्षा आप ब्रह्मसमाजी लोग जातिभेद आदि कुछ नहीं मानते, यदि यह बात सच है तो फिर आप सभी लोग ब्रह्मा सबसे पहले मातंग – महारो, भंगी, चमार (आदि अछूतों) को ब्रह्मा बना कर उन्हें अपने ब्रह्मसमाज में क्यों नहीं शामिल कर लेते ?''[3]

अपनी पुस्तक गुलामगिरी की प्रस्तावना में दलितों के प्रति ब्राह्मणवादी व्यवस्था की दुरभिसंधियों को ज्योतिबा फुले ने स्पष्ट शब्दों में रेखांकित किया है –

''सैकड़ों सालों से आज तक शूद्रादि–अतिशूद्र (अछूत) समाज जब से इस देश में ब्राह्मणी सत्ता कायम हुई; तब से लगातार जुल्म और शोषण के शिकार हैं। ये लोग हर तरह की यातनाओं और कष्टों में अपने दिन बिता रहे हैं। इसलिए इन लोगों को इन बातों पर ध्यान देना चाहिए और गंभीरता से सोचना चाहिए। ये लोग खुद को ब्राह्मण–पंडा–पुरोहितों के अत्याचारों से कैसे मुक्त कर सकते हैं, यही आज हमारे लिए सबसे खास सवाल है। यही इस ग्रंथ का उद्देश्य है।''[4]

दलित कन्याओं के लिए पाठशाला खोली। शूद्र और अतिशूद्र मानी जाने वाली जातियों एवं व्यक्तियों के लिए भी शिक्षा का प्रबंध किया। ज्योतिबा फुले एवं उनके पिता गोविंद राव के संभाषण नारी शिक्षा के प्रति ज्योतिबा फुले की वचनबद्धता की झलक मिलती है – गोविंद राव कहते हैं –

गोविंद राव ने ऊँची आवाज में कहा –

''लड़कियों की पाठशाला खोली और अपने साथ बहू को भी पाठशाला ले जा रहा है। क्या यह पुण्यकर्म है ?''

ज्योतिबा ने विनम्रता से उत्तर दिया –

''यह केवल पुण्यकर्म नहीं है बल्कि महान् पुण्यकर्म है। रही स्वर्ग नरक की बात। यह स्वार्थी लोगों की कल्पना है।''[5]

उन्होंने विधवाओं के पुनर्विवाह का जोरदार समर्थन किया और प्रचार भी किया। ब्राह्मण विधवाओं के मुण्डन के विरूद्ध आवाज उठाई। अनाथ बालकों और निराधार नारियों के लिए अपने घर में अनाथालय खोला और शुतिका गृह चलाया। किसानों और मजदूरों के लिए भी उन्होंने डट कर आवाज उठाई। उस समय अछूतों के लिए मंदिर के भीतर जाने की अनुमति नहीं थी। वह वेद सुन या पढ़ नहीं सकते थे। सिर्फ उच्च वर्ग के लोगों की सेवा–सुश्रषा करना ही इनका धर्म था।

ज्योतिबा फुले पर अमेरिकी लेखक थॉमस पेन का जबर्दस्त प्रभाव था। पेन ने अपनी पुस्तक 'Right of Man' में कहा है कि सभी मनुष्य एक है। धर्म और ईश्वर उनका निजी तथा व्यक्तिगत विषय है –

''विश्व का निर्णय कर्त्ता ईश्वर है और विशुद्ध भाव से उसकी भारण में जाने वाले मनुष्य एवं उसके बीच में किसी भी बिचौलिये की आवश्यकता नहीं है। ईश्वर के नाम पर धर्म का जो बाजार लगाया जाता है वह केवल अनावश्यक और अनिष्टकारी ही नहीं है, पापमूलक पाखंडसृजक भी है।''[6]

थॉमस पेन मानते हैं कि प्रत्येक मनुष्य की नैतिकता का उद्‌गम स्थल तो उसकी बुद्धि है जो सचमुच ही विशुद्ध धर्म साधना करना चाहते हैं उन्हें किसी भी साम्प्रदायिक या पंथ विशेष की उपासना पद्धति को अपनाने की कतई जरूरत नहीं है।''

पेन ने अपने धर्म संबंधित विचार को मानवता धर्म 'Religion of Humanity' में अभिव्यक्त किया है। ज्योतिबा के मस्तिष्क पर तत्कालीन धर्म के विकृत रूप का जबर्दस्त प्रभाव था। उनके विचारों में घमासान मचा था कि मैं शिक्षित हूँ फिर भी मुझे कनिष्ट क्यूँ समझा जाता है ? धर्म का ऐसा कुप्रभाव था कि जब उनके पिता ने चिंता का कारण पूछा तो ज्योतिबा ने उन्हें अपने अपमान की सारी बातें बताई। उसपर उनके पिता गोविंद राव ने थॉमस पेन की पुस्तक 'The age of Reason' को उद्धृत करते हुए कहा – ''उन्होंने दंड दिये बिना तुझे छोड़ दिया यह क्या कम उपकार है उसका ? बेटा हम शूद्र हैं और वे देवता। भला हम उनकी बराबरी कैसे कर सकते हैं ?'' उस समय धर्म का कुप्रभाव इस तरह से व्याप्त था कि दमन करने वाला और सहने वाला दोनों की सोच एक थी। इसके विपरीत ज्योतिबा पर पेन महोदय का प्रभाव जबर्दस्त पड़ा। उनके अनुसार सभी मनुष्य एक ईश्वर की संतान हैं। कनिष्ठ जातियों में शिक्षा के प्रसार से ही उनके ज्ञान का द्वार खोला जा सकता है तभी वे लोग सामाजिक समता के लिए लड़ेंगे और मानसिक गुलामी के विरूद्ध बगावत करेंगे।

ज्योतिबा फुले यह मानते थे कि सामाजिक उत्थान के लिए नारी का सर्वांगीण विकास महत्वपूर्ण है। बिना नारी के विकास के किसी भी समाज का सम्पूर्ण विकास संभव नहीं है। नारी की दुर्दशा से वे काफी आहत थे। इसकी झलक महादेवी वर्मा की इन पंक्तियों में मिलती है –

''विस्तृत नभ का कोई कोना।
मेरा न कभी अपना होना।
परिचय इतना इतिहास यही।
उमड़ी कल थी मिट आज चली।
मैं नीर भरी दुःख की बदली।''[7]

नारी वह ध्रुव है जिस पर परिवार ही नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज घूमता है। जिस समाज में नारी का सम्मान नहीं होता, उस समाज को रसातल में जाने से कोई भी नहीं बचा सकता – ''यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।'' नीरू टंडन के शब्दों में –

"Wollstonecreft rejects Rousseau's idea that men and women think differently… when women do reason differently or incorrectly : its due to lack of training."[8]

इस बात से ज्योतिबा फूले भी भली भांति अवगत थे। इस कारण सामाजिक संरचना को सुगठित करने के लिए नारी शिक्षा पर उन्होंने विशेष बल दिया। उन्होंने 1848 में पूना के बुधवार पेठ में भिड़े के बाड़े में लड़कियों की शिक्षा के लिए पाठशाला की नींव डाली। भारत में निम्नवर्ग के शैक्षणिक उत्थान आंदोलन को धार देने के लिए सर्वप्रथम अपनी पत्नी सावित्री बाई को उन्होंने सुशिक्षित किया जो बाद में उनके साथ उनके सामाजिक सुधार और नारी शिक्षा से जुड़े आंदोलनों में कंधे–से–कंधा मिलाकर चली। इसके उपरांत ज्योतिबा ने नारी शिक्षा के साथ–साथ बहुजन समाज के उत्थान में अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। 1968 की छात्र सभा में जर्मन मार्क्सवादी स्त्री कार्यकर्ता हेल्के सेंडर कहती हैं –

''स्त्री को पहचान तभी मिलेगी जब वह मंच पर अपने निजी जीवन की समस्याओं को अभिव्यक्त करें और इसी आधार पर राजनैतिक रूप से एकबद्ध होकर संघर्श करें।''[9]

बहुजन समाज के कल्याण के लिए उन्होंने 1855 में रात्रिकालीन पाठशाला शुरू की। अंग्रेजों ने ज्योतिब फुले के इस कदम की मुक्त कंठ से प्रशंसा की तथा मेजर कैंडी की अध्यक्षता में तत्कालीन इस्ट इंडिया कंपनी

द्वारा जारी पत्र में इसे रेखांकित किया गया। अंग्रेजी समाचार पत्र Bombay Guardian में 16 नवंबर 1852 को इस मुद्दे को प्रमुखता से छापा गया। परन्तु बहुत जल्द ही इस्ट इंडिया कंपनी के संचालकों द्वारा 1830 में तत्कालीन मद्रास सरकार को लिखे पत्र से ज्योतिबा फूले का भ्रम टूट गया। इस पत्र में यह कहा गया था कि शिक्षा का सुधार इस प्रकार किया जाए जिससे उच्च वर्ग की नीति और बुद्धिमत्ता का स्तर ऊँचा हो। इस प्रकार का प्रगतिशील परिवर्तन निम्नवर्ग में शीघ्रता से नहीं आ सकता। यह तय है कि तत्कालीन अंग्रेज शासक भारतीयों में शिक्षा की अलख जगाने के पक्षधर थे। परन्तु इसके पीछे उनका व्यक्तिगत स्वार्थ काम कर रहा था। सरकारी शिक्षा समिति के अध्यक्ष लार्ड मेकार्ले ने शिक्षा संबंधी एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त 'शिक्षा का झरने का सिद्धान्त' का अनुमोदन कर अपनी मंशा स्पष्ट कर दी –

"Education was to permeate the masses from drop by drop from the Himalaya of India. Life useful information was to trickle downwards, forming time abroad and stally stream to irrigate thirsty plain."

(Downword Filteration theory of education)

मैकाले की भारतीयों के विरूद्ध दुरभिसंधि की घृणित योजना इन पंक्तियों से ध्वनित होती है –

"We should form a class of persons, Indian is blood and of colour, but English in testes, in opinion, in morals and intalles."

इंटर शिक्षा समिति के समक्ष ज्योतिब फूले ने दृढ़ता से मैकाले द्वारा अनुशंसित शिक्षा नीतियों की खामियों को रेखांकित किया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में अपना अभिमत प्रकट करते हुए कहा कि इस शिक्षा नीति का ताना–बाना उच्च वर्गों विशेष कर ब्राह्मणों के हितों को ध्यान में रखकर किया गया है तथा दलितों, पिछड़ों एवं अश्पृश्यों के हितों की इसमें घोर उपेक्षा हुई है। उनका स्पष्ट उद्देश्य समाज को बांट कर लोगों में फूट डालकर अपना उल्लू सीधा करना था जिसके विरूद्ध ज्योतिबा फूले ने बगावत का घोर शंखनाद किया तथा अंग्रेजी सरकार की नींद उड़ा दी।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शोषित एवं पीड़ित वर्गों के सामाजिक उत्थान के लिए ज्योतिबा फूले का प्रयास श्लाघनीय है। इस वर्ग को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने की उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति ने एक नवीन सामाजिक क्रांति की आधारशिला रखी। उनकी स्पष्ट मान्यता थी कि समाज के सभी वर्गों को अपने उत्थान के लिए समान अवसर मिलने चाहिए। भाषा, रंग, जाति एवं धर्म के आधार पर खींची जाने वाली विभाजक रेखा के अस्तित्व को उन्होंने सिरे से खारिज कर दिया। उन्होंने एक ऐसी सामाजिक संरचना की नींव डाली जिसमें समाज के सभी वर्गों को विकास के समान अवसर सुलभ हो। उनकी संस्थापनाओं की झलक भारतीय संविधान द्वारा अनुमोदित संस्तुतियों में भी मिल जाती है जो कहीं–न–कहीं ज्योतिबा फूले के विचारों से अनुप्राणित रही है। समाज के सर्वांगीण विकास के लिए सभी वर्गों के हितों को समान महत्व प्रदान करना ज्योतिबा फूले की कार्यशैली में प्रमुखता से शामिल था। उनकी स्पष्ट मान्यता थी कि किसी एक वर्ग के हितों की अपेक्षा अन्य वर्गों के उत्थान का प्रयास करना आत्मघाती होगा। ऐसे प्रयासों से समाज का विकास संभव नहीं है। उल्टे इन प्रयासों से समाज में बिखराव की पृष्ठभूमि तैयार हो सकती है। ऐसे समाज से किसी का उत्थान संभव नहीं है। उन्होंने एक समतामूलक समाज की अवधारणा को गति प्रदान की जिसमें विकास की अपार संभावनाएँ निहित है। भारतीय संस्कृति द्वारा अनुमोदित 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' की अवधारणा में उनकी गहरी आस्था थी। वे इस मत के हिमायती थे कि जिस प्रकार भवन निर्माण में सभी ईटों की समान भूमिका होती है ठीक उसी प्रकार सामाजिक संरचना को मजबूती प्रदान करने के लिए समाज के सभी वर्गों की समान भागेदारी अपेक्षित है। विभिन्न वर्गों के बीच भेदभाव कर के समाज के नवनिर्माण की संकल्पना को मूर्त्त स्वरूप प्रदान नहीं किया जा सकता है। सभी वर्ग सामाजिक संरचना के महत्वपूर्ण अवयव हैं। इनके बीच परस्पर समभाव एवं तालमेल कायम कर इस महद् अनुष्ठान की सफल परिणति संभव है। सामाजिक संरचना से छेड़छाड़ कर सामाजिक उत्थान का अभिप्रेत फलीभूत नहीं हो सकता है। विभिन्न वर्गों के बीच प्रेम, सहिष्णुता एवं समभाव की भावना को संप्रेषित कर समाज द्वारा निर्धारित उच्चादर्शों को नवीन स्वरूप एवं कलेवर प्रदान किया जा सकता है। भेदभाव एवं कटुता स्वस्थ समाज की स्थापित मान्यताओं के प्रतिकूल है। यह समाज के अधोगति की ओर ले जाता है। सभी वर्गों को साथ लेकर ही विकास कार्यों को गति प्रदान की जा सकती है। ज्योतिबा फूले समाज के उपेक्षित वर्गों विशेषकर दलितों, शोषितों, अष्पृश्यों एवं महिलाओं के प्रति समाज के

आकाओं की उपेक्षापूर्ण दृष्टि से काफी आहत थे। इस परिपाटी को वे समाज के उत्तरोत्तर विकास के लिए आत्मघाती मानते थे। वे मानते थे कि इनकी क्षमताओं को कम करके आंकना हमारी भूल होगी। अगर उन्हें पर्याप्त अवसर सुलभ कराए जाएँ तो वे समाज की मुख्यधारा से जुड़कर विकास की गति को नई ऊचाइयाँ प्रदान कर सकते हैं। मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम ने भी रीक्षों, वानरों एवं भालुओं की कमजोर सी दिखने वाली सेना को कुशल नेतृत्व प्रदान कर लंकापति रावण के अभेद्य दुर्ग को ध्वस्त कर आम आदमी की शक्ति का अहसास कराया था। आवश्यकता इस बात की है कि समाज के दबे–कुचले वर्गों को उचित अवसर एवं परिस्थितियाँ सुलभ करायी जाए तथा उनके अंदर संचित असीम ऊर्जा के भंडार का देश के चतुर्दिक विकास में उपयोग किया जाए। इससे उनके मन में घर कर गई हीन भावना एवं उच्चवर्गों के प्रति उपेक्षा के भाव में कमी आएगी तथा उन्हें एक दूसरे के करीब आने में इससे प्रचुर सहायता मिलेगी। कालान्तर में गाँधीजी ने भी ज्योतिबा फूले के इस संदेश को गंभीरता से लेते हुए इस वर्ग को 'हरिजन' की संज्ञा प्रदान कर उनके सामाजिक उत्थान का बीड़ा उठाया। उनके दर्शन का आदर्श वाक्य था **'सबका साथ सबका विकास'**। इसी मूल भावना से अनुप्राणित होकर समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट कर उन्हें एक प्लेटफार्म पर लाने का उन्होंने भगीरथ प्रयास किया। उनके इन प्रयासों का प्रतिफल देश की आजादी के रूप में हमारे सामने है जिसके मूल में ज्योतिबा फूले के क्रांतिकारी विचारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। दलितों, शोषितों एवं स्त्रियों के सामाजिक उत्थान में ज्योतिबा फूले के अवदान मील का पत्थर साबित हुए हैं। आधुनिक भारत की नई तस्वीर के पीछे ज्योतिबा फूले की स्थापनाओं की प्रमुख भूमिका रही है। गांधी एवं अम्बेडकर प्रभृति सामाजिक चिंतकों ने उनके द्वारा स्थापित मानदंडों से प्रभाव ग्रहण कर एक समृद्ध आधुनिक भारत की आधारशिला रखी। ज्योतिबा फूले द्वारा संपोषित स्त्री एवं दलितों की शिक्षा से संबंधित विचारों को कालान्तर में नोबेल पुरस्कार विजेता प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने भी अपने विचारों के माध्यम से स्वीकृति की मुहर लगायी।

संदर्भ सूची

1. वर्मा, महादेवी, *शृंखला की कड़ियाँ*, पृ0–105
2. वही, पृ0–75
3. फुले, ज्योतिबा, *सत्सार*, पृष्ठ 18, सम्यक प्रकाशन, 2016
4. फुले, ज्योतिबा, *गुलामगिरी*, पृष्ठ 12, सम्यक प्रकाशन, 2012 (पंचम संस्करण)
5. जगताप, मुरलीधर, *सामाजिक क्रांति के अग्रदूत महात्मा ज्योतिबा फुले*, पृष्ठ 44, गौतम बुक सेन्टर, नई दिल्ली, 2011
6. वही, पृष्ठ 32
7. वर्मा, महादेवी, *यामा*, पृष्ठ–95
8. Tendon, Neeru, *Feminism* (Aparadigm shift) पृ0 सं0 – 10
9. खेतान, प्रभा, *स्त्री विमर्श अपनी जगह* (लेख), पृ0–186

वर्षा किरण
शोध–छात्रा , दर्शनशास्त्र विभाग , ति. मां. भागलपुर वि. वि. , भागलपुर.